December, 2016
Volume-5, Issue-20
ISSN 2278-4381

SHANTI E JOURNAL OF RESEARCH

Most Referred & Peer Reviewed
Multi Disciplinary E Journal of Research

CHIEF EDITOR
Dr. Rajeshkumar A. Shrimali
Assistant Professor
Shree H. S. Shah College of Commerce, Modasa.

CO-EDITOR
P.R. SHARMA

EXECUTIVE EDITOR
Rambhai V. Baku

http://www.shantiejournal.com/ ISSN : 2278-4381

SHANTI
E JOURNAL OF RESEARCH
ISSN -2278-4381

Multi Disciplinary and Peer-Reviewed Research Journal in India

PUBLISHED BY

http://www.shantiejournal.com/

SHANTI PRAKASHAN	OTHER CONTACT
H.Q	D-19/220, Nandanvan Appartment
1780, Sector-1, Delhi By Pass, ROHTAK-124001, (HARYANA)	(Nr. Bhavsar Hostel), New Vadaj, AHMEDABAD:- 380013.

DECEMBER-2016, VOLUME-5, ISSUE-20

http://www.shantiejournal.com/ ISSN :2278-4381

वाल्मीकि एवं वेदव्यास के वर्णनमें भगवानविष्णु

डॉ.महेन्द्रकुमार ए.दवे
एसोसियेटप्रोफेसर,साहित्यविभाग
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी,वेरावळ

भगवान् विष्णुका सीधा अर्थ है 'व्यापक' यथाकि-

जलेविष्णुः स्थले विष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके ।
ज्वालमालाकुले" विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥

अर्थात् "जलमें विष्णु है,स्थलमें विष्णु है,पर्वतके शिखरपर भी विष्णु हैं तथा अग्निकी ज्वाला-मालाओंसे व्याप्त स्थानमें भी विष्णु हैं ।इस प्रकार सारा जगत् ही विष्णुमय हैं ।[1] जब हिरण्यकशिपुकी आज्ञासे दैत्यलोग प्रहलादको मारने आये उस समय वो निर्भर होकर कहते हैं कि "अरे, दैत्यो ! मेरे भगवान् विष्णु इन शास्त्रोंमें भी हैं ,तुम लोगोंमें भी हैं ,वे सबजगह हैं ,इस परम सत्यके प्रभावसे तुम्हारे इन शास्त्रोंका मुझपर कोई प्रभाव न हो ।[2]

भारतीय साहित्यकी आदिभूमि वेद हैं । वेदार्थसे सम्पन्न हमारा आदिकाव्य रामायण और महाभारत हैं ,जिनकी शीतल ,सुखद और पुण्यमयी छायामें भारतीय कवि काव्यरचनाकी प्रेरणा प्राप्त करते आ रहे हैं । भगवान् विष्णु सर्वव्यापक हैं । उनके स्वरूप तथा अवतार-रूपों पर भारतीय साहित्यमें विशेषतया काव्य-साहित्यमें प्रचुर प्रकाश डाला हैं । श्रीविष्णु समस्त कल्याणमय गुणोंसे सम्पन्न निरामय विश्वमूर्ति भगवान्के रूपमें हमारे काव्यसाहित्यमें चित्रित किये गये हैं ।

'यतो यश्च स्वयं विश्वं स **विष्णुः परमेश्वरः** ।[3] अर्थात् ' परमेश्वर विष्णुसे ही जगत् प्रकट हुआ हैं ,वे ही विश्वके रूपमें प्रकट हैं"। श्रीविष्णुके परम स्वरूपका चिन्तन कर मनुष्य सुखी होता हैं और संसारसे उसका शीघ्रही उद्धार हो जाता हैं । यथा –

एतस्य परमं रूपं यश्चिन्तयति मानवः ।
स सुखी स च संसारात् समुत्तीर्णोऽचिराद् भवेत् ॥[4]

श्रीविष्णु संपूर्ण ऐश्वर्य,धर्म,यश,श्री,ज्ञान और वैराग्यसे युक्त भगवान् हैं । वे सर्वाधार और सर्व पोषक हैं । स्तुति करने वाले मेधावी कवि श्रीविष्णुके पवित्र चरित्रका चिन्तन कर अपने हृदयको प्रकाशित करते हैं ,तथा जगतका कल्याण करते हैं । रामायणकार और महाभारतकारने भी भगवान् विष्णुके यशोगान करके विशेष भावाञ्जलि दी हैं।

- **आदिकवि वाल्मीकिके रामायणमें विष्णुका यशोगान:-**

आदिकवि वाल्मीकि वैष्णव कवि हैं । उन्होंने रामायणमें भगवान् विष्णुके रामरूपका लीला-चरितचित्रित किया हैं । वाल्मीकि-रामायण आदिकविके करुणापूर्णवैष्णव हृदयकी अप्रतिम देन हैं । यह वैष्णव साहित्य हैं । महर्षि वाल्मीकि वरुणके पुत्र थे ,तमसा नदीके तटपर उनका आश्रम था । स्कन्दपुराणमें वैशाख-माहात्म्यमें उन्हे जन्मान्तरका व्याध बताया गया हैं ।व्याधजन्ममें शखऋषिके सत्संग और रामनाम के जापसे वे दूसरे जन्ममें अग्निशर्मा-रत्नाकर नामसे प्रसिद्ध हुए । इस जन्ममें भी व्याधोंके संगमें रहने से वे व्याधकर्ममें प्रवृत्त थे ।सप्तर्षियोंका सत्सङ्ग प्राप्तकर तथा रामनामका उलटा जापकरके वे महर्षि वाल्मीकि कहलाये और तपके प्रभावसे तथा जगत्स्त्रष्टा ब्रह्माजीकी प्रेरणासे उन्होने रामायणकी रचना की अध्यात्म रामायण अयोध्याकाण्डमें छठे सर्गके ६४वेंसे ९६ तकके श्लोकोमें वाल्मीकिके जीवनपर प्रकाश डाला गया

---

[1] विष्णुपञ्चरस्तोत्र- २३

[2] **विष्णुःशस्त्रेषु युष्मासु मयि चासौ व्यवस्थितः।**
दैत्येयास्तेन सत्येन माऽऽकमन्त्वायुधानि च ॥

-विष्णु;पुराणम् - १-१७-३ .

[3] विष्णुपुराणम् -१-१७-२२

[4] मार्कण्डेय पुराणम्-१९-३९

है । इन श्लोकोंमें महर्षि वाल्मीकिने स्वयं अपनी आत्मकथा कही है कि किस तरह सप्तर्षियोंके उपदेशमें वे तप कर वल्मीक(दीमकों) की मिट्टीके ढेरसे ढक गये और उन ऋषियोंके फिर पधारने पर उन्होंने किस तरह 'वाल्मीकि' नाम प्राप्त किया । उसके वचन हैं-

एवं बहुतिथे काले गते निश्चलरूपिण: ।
सर्वसङ्गविहीनस्य वल्मीकोऽभून्ममोपरि ॥
ततो युगसहस्रान्ते ऋषय: पुनरागमन् ।
मामूचुर्निरुकामस्वेति तच्छ्रुत्वा तूर्णमुत्थित: ॥
वल्मीकान्निर्गतश्चाहं नीहारादिव भास्वर: ।
मामप्याहुर्मुनिगणा वाल्मीकिस्त्वं मुनीश्वर: ॥
वल्मीकात्सम्भवो यस्माद् द्वितीयं जन्म तेऽभवत् ।
इत्युक्त्वा ते ययुर्दिव्यगतिं रघुकुलोत्तम ॥[5]

"इस तरह बहुत समयतक निश्चलतापूर्वक रहनेसे मुझ सर्वसङ्गविहीनके ऊपर वल्मीक (दीमकोंकी बाँबी) बन गया । इसके बाद एक हजार युग बीतने पर वे ऋषिगण लौटे, तब उन्होंने मुझसे कहा- निकल आओ' । यह सुनकर मैं तुरंत खडा हो गया । जिस तरह कुहरेके भीतरसे सूर्य निकल आता है ,उसी तरह मैं वल्मीकसे निकले हो, इसलिये तुम्हारा यह दूसरा जन्म हुआ हैं ।" –यो कहकर वे दिव्यलोकको चले गये'

एक दिन महर्षि वाल्मीकि अपने शिष्य भरद्वाजके साथ स्नानके लिये तमसा नदीके तटपर आये। सहसा एक पापमति निषादने कामविह्वल क्रौञ्चपक्षीके जोडेमेंसे नर क्रोञ्चको मार डाला । वाल्मीकिका हृदय इस महान् क्रूरकर्मसे संतप्त होकर द्रवित हो उठा ; उनकी वैष्णावता-परदु:खकातरता काव्यके रूपमें फूट पडी-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा : ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी: काममोहितम् ॥[6]

अर्थात् "हे निषाद ! तुझे चिरकालतक शान्ति न मिले ;क्योंकि तूने क्रोञ्चके जोडेमेंसे एककी ,जो कामसे मोहित हो रहा था ,बिना किसी अपराधके ही हत्या कर डाली ।"

पुण्यमय आदिकाव्यके रूपमें वाल्मीकि रामायण भगवान् विष्णुकी रामरूपमें अभिव्यक्तिका सरस इतिहास हैं । यह वैष्णव काव्य हैं ।

यदि यह कहा जाय कि काव्यके समस्तगुण,अलंकार,रस,वृत्ति,ध्वनि आदि वाल्मीकि रामायणमें साकार हो उठे हैं,तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी । इतना ही नहीं,महर्षि वाल्मीकिने अपने काव्यको विष्णुभक्तिसे धन्य कर दिया ।इससे श्रवणसे विष्णुलोककी प्राप्ति होती हैं ।

वाल्मीकि रामायणमें आदिसे अन्ततक भगवान् विष्णुका ही लोकपावन चरित वर्णित हैं । ऋष्यशृङ्गद्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ आरम्भ किये जाने पर देवताओंने विष्णुसे प्रकट होनेकी प्रार्थना की । भगवान् विष्णु प्रकटा हुए ।महान् तेजस्वी जगत्पति विष्णु मेघके ऊपर स्थित सूर्यकी भाँति गरुडपर सवार होकर आ पहुँचे । उनके शरीरपर पीताम्बर ,हाथोंमे शख,चक्र,गदा आदि आयुध शोभित थे ।दोनों भुजाओमें तप्त स्वर्णके केयूर थे । देवता उनकी वंदना कर रहे थे । यथा-

एतस्मिन्नतरे विष्णुरूपयातो महाद्युति: ।
शङ्खचक्रगदापाणि: पीतवासा जगत्पति: ॥
वैनतेयं समारूह्य भास्करस्तोयदं यथा ।
तप्तहाटककेयूरो वन्द्यमान: सुरोत्तमै ॥[7]

---

[5] अध्यात्मरामायणम्-अयोध्याकाण्ड:-६ / ८३-८६
[6] वाल्मीकि रामायणम्-२-१५
[7] वाल्मीकि रामायणम्-बालकाण्ड: १५/१६-१७

देवताओंने प्रार्थना की- "हे देव! अपने चार स्वरूप बनाकर आप तीनों रानियोंके गर्भमें पुत्ररूपमें अवतार ग्रहण कीजिये । मनुष्यरूपमें प्रकट होकर आप संसारके लिये प्रबल कण्टकरूप,देवताओंसे अवध्य रावणको समरभूमिमें मार डालिये "- यथा-

विष्णो पुत्रत्वमागच्छ कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ।
तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टकम् ॥
अवध्यं दैवतैर्विष्णो समरे जहि रावणम् ॥[8]

कमल नयन श्रीहरिने अपने-आपको चार स्वरूपोंमे प्रकट कर राजा दशरथको पिता बनाने का निश्चय किया -

तत पद्मपलाशाक्ष: कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ।
पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ॥[9]

महर्षि वाल्मीकिने अयोध्याकाण्डके आरम्भमें स्वयं कहा हैं कि 'राम साक्षात् सनातनविष्णु थे ' । परम प्रचण्ड रावणके वधकी अभिलाषा रखनेवाले देवताओंकी प्रार्थनापर वे मनुष्यलोकमें अवतरित हुए थे '-

स हि देवैरुदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभि:।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णु: सनातन: ॥[10]

वाल्मीकि रामायणके युद्धकाण्डमें देवताओंके साथ ब्रह्माने विष्णुस्वरूप रामके स्तवनमें कहा हैं कि 'आप ही शाङ्गधन्वा,हृषीकेश,अन्तर्यामी,पुरुष और पुरुषोत्तम हैं । आप किसीसे पराजीत नहीं होते । आप नन्दक नामक खण्ड धारण करनेवाले विष्णु एवं महाबली कृष्ण हैं ।आप अविनाशी परब्रह्म हैं । सृष्टिके आदि,मध्य,अन्तमें आप सत्यरूपसे विद्यमान हैं । आप ही लोकोंके परम धर्म हैं ,विष्वक्सेन और चतुर्भुज हरि हैं । आप चक्रधारण करनेवाले सर्वसमर्थ श्रीमान् भगवान् नारायण है , एक दाढवाले पृथ्वीधारी वराह हैं तथा देवताओंके भूत एवं भावी शत्रुओंको जीतनेवाले हैं ' यथा-

भवान् नारायणो देव: श्रीमांश्चक्रायुध: प्रभु: ।
एकशृङ्गो वराहस्त्वं भूतभव्यसपत्नजित् ।
अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्य् चान्ते च राधव ।
लोकानां त्वं परो धर्मो विष्वक्सेनश्चर्भुज: ॥
शाङ्गधन्वा हृषीकेश: पुरुष:पुरुषोत्तम: ।
अजित: खड्गधृग् विष्णु: कृष्णश्चैव बृहद्बल: ॥[11]

महर्षिवाल्मीकिने 'कवि'शब्दको सार्थक किया हैं ।उनका रामायणकाव्य अजस्र आनन्दस्रोत हैं ,ज्ञाननिधि हैं । उन्होने अपने काव्यमें वैष्णवरस-भागवतरसकी दिव्यधारा प्रवाहित की । वाल्मीकिकी मौलिक वैष्णव काव्यकृति रामायणके संबन्धमें प्रशस्ति हैं-

रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थ सम्मतम् ।
सर्वपाप हरं पुण्यं सर्वदु:खनिबर्हणम् ।
समस्तपुण्यफलदं सर्वयज्ञफलप्रदम् ॥[12]

'रामायण आदिकाव्य हैं । यह संपूर्णवेदोके तात्पर्यके अनुकूल हैं ।इसके द्वारा समस्त पापोंका निवारण हो जाता हैं । यह पुण्यमय काव्य सम्पूर्ण दु:खोंका विनाशक तथा समस्त पुण्यों और यज्ञोंका फल देनेवाला हैं ।

- **महर्षि व्यासके महाभारतमें विष्णुका यशोगान:-**
  भगवान् विष्णु और उनके अनेक अवतारोंका तत्त्व,रूप,और लीलाका चिन्तन करनेवालोंमे भारतीय साहित्यमें महर्षिव्यास अग्रगण्य हैं ।उनके द्वारा रचित प्राय सभी पुराणों और महाभारत आदिमें

---

[8] वाल्मीकि रामायणम्- बालकाण्ड:-१५/२१२-२२
[9] वाल्मीकि रामायणम् -बालकाण्ड:-१५/३१-३२
[10] वाल्मीकि रामायणम् -अयोध्याकाण्ड-१-७
[11] वाल्मीकि रामायणम्-युद्धकाण्ड:-११७/ १३-१५
[12] स्कन्दपुराणम्-वैष्णव.,रामायणम्-माहात्म्य-५ \ ६१-६२.

भगवान् विष्णुका प्रचुरतासे चित्रण उपलब्ध होता हैं ।उन्होंने प्रचुर वैष्णव साहित्य प्रदान किया । नारदपुराणमें महर्षि वेदव्यासके विषयमें शौनकने कहा हैं कि भगवान् मधुसूदन ही प्रत्येकयुगमें वेदव्यासके रूपमें प्रकट होते हैं और एक ही वेदके अनेक विभाग करते हैं ।वेदव्यासमुनि साक्षात् नारायण ही है । यथा—

युगे युगेऽल्पकान् धर्मान् निरीक्ष्य मधुसूदन: ।
वेदव्यासस्वरूपेण वेदभागं करोति वै ॥
वेदव्यासमुनि: साक्षान्नारायण इति द्विजा: ।[13]

व्यासजी पराशरके आत्मज थे ।उनके मुख-कमलसे निकले वाङ्मयरूपी अमृतका पान समस्त जगत् करता हैं ।वे सत्यवतीके हृदयको आनन्दित करनेवाले थे । यथा-

जयति पराशरसूनु: सत्यव्रतीहृदयनन्दनो व्यास: ।
यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयममृतं जगत्पिबति ॥[14]

भारतीयवाङ्मयमें समस्त अध्यात्मज्ञान, परमात्मज्ञान, दर्शन-मर्मादि परमवैष्णव व्यासदेव कृष्णद्वैपायनकी अहैतुकी करूणाकी देन हैं । उन्होंने मानवताको् वैष्णवधर्म-भागवतधर्मसे समृद्धकर चिरकालके लिये उनको अपनी कृपाका आभारी बना लिया । उनके चरणदेशमें भगवल्लीला कथा रसोन्मत्त परम भागवत शुकदेवकी श्रद्धाञ्जलि हैं । यथा-

नमस्तस्मै भगवते वासुदेवाय वेधसे ।
पपुर्ज्ञानमयं सौम्या यन्मुखाम्बुरुहासवम् ॥ [15]

अर्थात् " संत-महात्मा जिनके मुख-कमलसे मकरन्दके समान झरती हुई ज्ञानमयी सुधाका पान करते हैं ,उन परम तेजस्वी वासुदेवस्वरूप भगवान् व्यासदेवको नमस्कार हैं ।"वेदोंमे व्यासजीकी स्तुस्ति इन शब्दोंमे की हैं –'महाप्राज्ञ व्यासदेव ! आपको धन्यवाद हैं । आप साक्षात् विष्णुस्वरूप हैं ,शरीरधारियोंके आत्मा हैं ।अजन्मा होकर भी आप जन्मधारण करते हैं और लोकके उपर अनुग्रह करते हैं । आपको सांसारिक कर्मबन्धनका कोई भय नहीं हैं । आपपर माया –अविद्याका कोई प्रभाव नहीं हैं । अपनी ईच्छासे ही आप शरीर धारण करते हो ,और तिरोहित होते हो ।आपने वेदोंद्वारा प्राप्त अर्थ ही प्रकाशित किया हैं । यथा-

साधु साधु महाप्राज्ञ विष्णुरात्मा शरीरिणाम् ।
अजोऽपि जन्म सम्पद्य लोकानुग्रहमीहसे ॥
अन्यथा ते न घटते संसार कर्मबन्धनम् ।
अस्पृष्टो मायया देव्या कदाचिज्ज्ञानगूह्या ॥
बिभर्षि स्वेच्छया रूपं स्वेच्छयैव निगूह्यसे ।
अस्मत्सम्मत एवार्थो भवता सम्प्रदशित: ॥[16]

महर्षि व्यासका प्रागट्य सत्यवती नामकी वसुकन्यासे यमुना मध्यवर्ती एक द्वीपमें महर्षि पराशरके पुत्ररूपमें हुआ था । वर्णकृष्ण और द्वीपमें जन्म होनेसे कृष्णद्वैपायन और वेदोंका विस्तार करनेसे व्यास कहलाये । श्रीमद्भागवत जैसा हि व्यासका जन्म वर्णन महाभारतमें वर्णित हैं ।

भगवान् विष्णुके परमस्वरूपके चिन्तनकी महिमापर प्रकाश डालते हुए महर्षि व्यासकी सौभाग्यवती वाणीका संदेश हैं कि 'शङ्ख'चक्र, गदा और शाङ्गधनुष्य धारणकरने वाले अनन्त और अप्रमेय भगवान् विष्णुके अनेक अवतार पुराणोंमे वर्णित हैं । जो मनुष्य उनके परम स्वरूपका चिन्तन करता हैं , वह सुखी होता हैं और संसारसे यथा शीघ्र पार उतर जाता हैं । यथा-

विष्णोश्चराचरगुरोरनन्तस्य महात्मन: ।
प्रादुर्भावा: पुराणेषु कथ्यन्ते शाङ्र्गधन्वन: ॥

---

[13] नारदपुराणम्-प्र.पाद १ ।१७-१८.

[14] वायुपुराणम्- १-१-२ .

[15] श्रीमद्भागवत:- २ \ ४ \२४.

[16] वायुपुराणम् - १०४ \ १०५ -१०७.

http://www.shantiejournal.com/
ISSN :2278-4381

अनन्तस्याप्रमेयस्य शङ्खचक्रगदाभृत: ।
एतस्यपरमं रूपं यश्चिन्तयति मानव: ।
स सुखी स च संसारात् समुत्तीर्णोऽचिराद् भवेत् ॥[17]

परमपुरुष नारायणका तत्त्व-निरूपण करते हुए महर्षिव्यास कहते हैं कि 'जितनी कथाएँ हैं तथा जो-जो श्रुतियाँ हैं जो धर्म हैं तथा धर्म परायणपुरुष हैं , जो विश्व तथा विश्वके स्वामी हैं , ये सब के सब भगवान् नारयणके ही स्वरूप हैं । जो सत्य हैं । मिथ्या हैं , आदि मध्य अन्तमें हैं , जो सीमा रहित अविध्य हैं , जो चर-अचर प्राणी हैं तथा इनके अतिरिक्त भी लो कुछ वस्तु हैं वह सत्य पुरुषोत्तम नारयण ही हैं ।

या कथा याश्च श्रुतयो यो धर्मी धर्मतत्पर: ।
विश्वं विश्वपतिर्यश्चस तु नारायण: स्मृत: ।
यत् सत्यं यदनृतमादिमध्यभूतं ।
यश्चान्त्यं निरवधिकं च यद्भविष्यम् ।
यत्किंचिच्चिरमचरं यदस्ति चान्यत् –
सर्वं तत् पुरुषवर: प्रधानभूत: ॥[18]

महर्षिव्यासकी वाणी अजन्मा, आदि-पुरुष भगवान् विष्णुका संस्तवन करती हैं – 'जो सृष्टिके लिये उन्मुख हो तीन गुणोंका स्वीकार कर ब्रह्मा,विष्णु,शिव नामके तीन दिव्य स्थूलशरीरोंको ग्रहण करते तथा विराट्-पुरुषरूप होकर अपने रोमकूपोंमें सम्पूर्ण विश्वको धारण करते हैं ; जिन्होंने अपनी कलाद्वाराभी सृष्टि-रचना की हैं तथा जो सूक्ष्मरूपसे सदा सबके हृदयमें विराजमान हैं , उन महान् आदि पुरुष अजन्मा परमेश्वरका मैं भजन करता हुं । यथा –

स्थूलास्तनूर्विदधतं त्रिगुणं विराजं –
विश्वानि लोमविवरेषु महान्तमाद्यम् ।
सृष्ट्युन्मुख: स्वकलयापि ससर्ज सूक्ष्मं-
नित्यं समेत्य हृदि यस्तमजं भजामि ॥[19]

महर्षि व्यास नारायणांशासे प्रकट विष्णुस्वरूप वैदिकज्ञान निधि हैं । उन्होंने श्रुतिगणोंको बछडा बनाकर भारती रूपिणी कामधेनुसे अपूर्व,अमृतसे भी उत्तम एवं मयुर दुग्धस्वरूप पौराणिक स्वारस्यके प्रतीकरूपमें समस्त जगत् को भागवत् माधुर्य- वैष्णवरस प्रदान किया । उनकी महिमाका तो कहना ही क्या? ऋग्वेदमें कहा गया हैं कि "भगवान् विष्णुका वैभव अपार हैं उसका पार आजतक कोई नहीं पा सका हैं । यथा-

' न वै विष्णो जायमानो न जातो
देव महिम्न: परमन्तमाय ।'[20]

---

[17] मार्केण्डेय पुराणम् १९ । ३७ -३९.
[18] पद्मपुराणम्- सृष्टि. ४१ । २७-२८.
[19] ब्रह्मवैवर्तकपुराणम् - ब्रह्मखण्ड:-१-२.
[20] ऋग्वेद: ७ - ९९- ९.